भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 24 अंक : 4 | गुरुवार, 26-4-2001 | वार्षिक चंदा : 50-00

4 मई..... प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जयंती का शुभ दिन

4 मई यानि–प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जयंती का महामंगलकारी दिन....

प.पू. स्वामिजी यानि–गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा चुने गए पनौते वारिसदारों में से एक लाडले वारिसदार !

प.पू. स्वामिजी यानि–देश-विदेश में बसे हजारों संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों के दिल की धड़कन-सी प्रभुधारक विभूति..... सो–

धन्य हो महाराज की करुणा को,
धन्य हो महाराज की उद्दात्त कल्याणकारी योजना को,
धन्य हो महाराज की मुक्तों के प्रति की प्रीति को,
धन्य हो महाराज के संबंध को...

वर्तमान युग के कलियुग में अनंत प्रकार की आधि, व्याधि, उपाधि से संतप्त जीवों के जीवन में रसबस होकर सच्चे अर्थ में अक्षरधाम का सुख, शांति, आनंद प्रगटाने का भगीरथ कार्य प.पू. स्वामिजी कर रहे हैं.... स्थूल, सूक्ष्म, आध्यात्मिक हर प्रकार से भक्तों की रक्षा करने ही उनका एक मात्र उद्यम है। सच है कि तन के रोग, धन के रोग तो शायद कोई टाल सकता है, पर मन के और आत्मा पर लगे धब्बों को कौन मिटाएगा ? वो तो ऐसी प्रभुधारक विभूति ही टाल सकती है ना !

देश-विदेश के अनेक मुक्त आज अपने श्रेय के लिए प.पू. स्वामिजी के वचन को अध्धर झेल कर श्रद्धा भक्ति और महिमा से अपना तन, मन, धन-कुछ भी प्यारा रखे बिना जो अद्‌भुत सेवा कर रहे हैं... प.पू. स्वामिजी के लिए सब कुछ कुर्बान करने–याहोम होने की एकमात्र चाहना जो उनके जीवन का लक्ष्य बना है–वह सर्जन ही तो है प.पू. स्वामिजी का साक्षात् परिचय, दर्शन और महिमा ! प.पू. स्वामिजी आज नासाज़ तबियत में भी गांव-गांव, घर-घर घूम कर एक आत्मीय समाज–एक सुहृद् समाज की स्थापना करने कल्पनातीत अविरत परिश्रम कर रहे हैं.....

प.पू. स्वामिजी कई वर्षों तक युवक के रूप में गुरुहरि योगीजी महाराज के पर्सनल सेवक बन कर रहे। अपने वर्तन से खुद जीकर उन्होंने बताया कि हमें सेवा किस प्रकार से, किस भाव से और कैसी महिमा से करनी चाहिए.... इस बारे का निम्न प्रसंग निहारें–

एक बार सारंगपुर में गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. स्वामिजी को बुला कर बताया कि नारायण घाट पर जलझीलनी एकादशी का उत्सव करेंगे। परसों नारायण घाट पर उत्सव करेंगे और आनंद करेंगे...

प.पू. स्वामिजी को विचार आया कि बापा ने विशेष रूप से मुझे बुला कर यह कहा है, तो पहले उस जगह की सफाई इत्यादि देख आऊँ व सारी व्यवस्था करके आऊँ, तो– बापा राजी हो जाएंगे....। लगातार तीन दिन तक सब युवकों को साथ लेकर दिन-रात देखे बिना नारायण घाट पर सारी जगह एकदम साफ-सुथरी करके सारी व्यवस्था कर दी।

तीसरे दिन सुबह बापा की कमर दबाने की सेवा करने जब प.पू. स्वामिजी पांच मिनिट लेट पहुंचे, तो बापा ने पूछा कि गुरु ! कहां चले गए थे, मैं कब से राह देख रहा हूँ ? प.पू. स्वामिजी ने जवाब दिया–बापा हम सब वहां नारायण घाट पर सफाई करके आए.... यह सुनते ही बापा ने प.पू. स्वामिजी का सिर अपनी गोद में रखा और करीब सात मिनट तक उनके सिर पर अपना सिर रख कर बैठे रहे। यूं अत्यधिक प्रसन्नता बताई और बहुत प्रसन्न होकर तीन आशीर्वाद दिए–

1. हमने जैसे शास्त्रीजी महाराज का सेवन किया वैसा आपने हमारा किया है।

2. जितने-जितने युवक तुम्हारे योग में आएंगे, उन सभी का शास्त्रीजी महाराज आत्यंतिक कल्याण करेंगे।

3. जाओ, आज से ब्रह्मज्ञान फूटेगा और वह झरना अखंडित बनेगा।

कैसे भव्य आशीर्वाद ! **बड़े पुरुष अगर इस तरह हमारी किसी भी सेवा से राजी हो जाएं, तो फिर कोई साधना करनी बाकी नहीं रहती....**

हम भी सेवा तो करते हैं, पर उसमें कहीं ना कहीं अव्यक्त मान की चाहना, अपेक्षा, आग्रह, बराबरी, वाह-वाही कराने की भावनाएं, किसी को नीचा दिखाने आदि कई लालसायें छुपी होती हैं। इसलिए हमारी करी सेवा का हमें जो फल मिलना चाहिए वह प्राप्त नहीं होता, बल्कि हम उल्टा घाटे में चले जाते हैं.... प.पू. स्वामिजी इस छोटे से प्रसंग द्वारा हमें यह सिखाना चाहते हैं कि अगर हम केवल स्वरूप को प्रसन्न करने की ओर नज़र रख कर अहोभाव व महिमा से सेवा करेंगे तो स्वरूप हम पर फिदा होकर कई गुण बख़्शिश में दे देंगे।

एक आदर्श साधक को सेवा करते हुए कैसी जाग्रतता, सजगता रखनी चाहिए वह भी गुरुहरि योगीजी महाराज सूक्ष्म भूलें बता कर जाग्रत करते और चैतन्य का विकास करने अद्‌भुत जतन करते। सेवा से ही संबंधित प.पू. स्वामिजी का एक अन्य प्रसंग निहारें–

एक बार बापा के साथ प.पू. स्वामिजी धंधुका स्टेशन पर ट्रेन में चढ़ने के लिए खड़े थे.... ट्रेन आ गई... अभी आधी मिनिट ही हुई थी कि बापा एकदम खूब गुस्से से बोले कि क्या सूझ नहीं पड़ती ? यह इतना सारा सामान चढ़ाना है... यह बोलते हुए बापा का मुखारविंद एकदम लाल और आंखें भी मानो एकदम लाल-लाल जैसी हो गईं।

प.पू. स्वामिजी तो बापा के इतने गुस्सा होने का कारण समझ ही नहीं पाये.... दूसरे दिन सुबह बापा पूजा में बैठे थे, तो स्वामिश्री ने बापा को इतनी अधिक नाराजगी ग्रहण करने का कारण पूछा.... बापा अत्यधिक सूक्ष्म भूल बताते हुए बोले कि–

तुम जब सारा सामान गाड़ी में चढ़ा रहे थे, तब उस क्षण तुम शास्त्रीजी महाराज को भूल गए थे ! स्वामिजी बोले कि– हाँ, बापा यह सच है कि उस समय मैं मूर्ति भूल कर सेवा के ही आकार से हो गया था।

अर्थात्– बापा को स्वामिजी का एक सैकण्ड भी मूर्ति भूलना बर्दाश्त नहीं था। फिर स्वामिजी ने बापा को पूछा कि बापा ! यह तो बहुत मुश्किल है। इस जन्म में हो पायेगा ? बापा ने बहुत शांति से समझाते हुए कहा कि–

1. सेवा करते हुए किसी को कुछ अंटशंट बोल दें, टोक दें, डांट दे, तो हमारी सेवा व्यर्थ हो जाती है।

2. किसी के अभाव-अवगुण की बात सुन लें, किसी को उसकी कसर-कमज़ोरी-क्षति का एहसास कराने की चेष्टा करें, तो हमारी सेवा व्यर्थ हो जाती है।

3. किसी के पास कोई आग्रह रखें या उसे जबरन अपने मुताबिक वर्ताएं, तो हमारी सेवा व्यर्थ हो जाती है।

4. भजन करते-करते सेवा ना करें, तो हमारी सेवा व्यर्थ हो जाती है।

5. स्वरूप की स्मृति करते-करते सेवा ना करें, तो हमारी सेवा व्यर्थ हो जाती है।

और हंसते-हंसते बापा बोले–'गुरु ! प्रारंभ की तीन बातों का ध्यान तुम रखना,भजन और स्मृति हम करवाएंगे।'

फिर स्वामिश्री ने हाथ जोड़ कर दीनभाव से प्रार्थना करके जब ऐसी सेवा करने की सुरुचि बताई, तो बापा ने अन्तर की प्रसन्नता बताते हुए आशीर्वाद दिए–

'आज से निर्दोषबुद्धि रूप सेवा हुआ करेगी ! बड़े पुरुषों के चरित्र, क्रियाएँ जँचाएं, तो निर्दोषबुद्धि रूपी सेवा हुई कही जाए..... बड़े पुरुषों के चरित्र जँचाते रहें तो महाराज अक्षरधाम का बुद्धियोग दे देते हैं, जिससे संबंध अखंड बनता है। जाओ आज से हमारा संबंध अखंड हो गया !

कैसे भव्य आशीर्वाद बापा ने प्रसन्न होकर दे दिए.... बड़े पुरुषों को तो कोई भेददृष्टि का दायरा नहीं। जैसा हमारा भीतर का समर्पण, जितना हमारा दीनभाव उतना उनकी करुणा वर्षा का अस्खलित धोध निरंतर हमें सदा सुखी करने बहता ही रहता है। **कसर उनके देने में नहीं, बल्कि अब हमारे लेने में है।**

जैसे कि स्वामी की बातें प्र.-3 की 32वीं बात में भी लिखा है कि यदि भजन करते-करते क्रिया करेंगे तो अन्तर में ठण्डक रहेगी और अन्तर में ठण्डक देख कर बड़े साधु राजी होते हैं व जिस पर बड़े साधु राजी हो जाएं, उसका जीव सुखी हो जाता है।

स्वामिनारायण महामंत्र की द्विशताब्दी के सुवर्ण वर्ष में व प.पू. स्वामिजी की जयंती के महामंगलकारी अवसर पर प्रार्थना करें–

1. 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' भजन करते-करते सेवा करने की अब हमें आदत पड़ जाए।

2. हर एक छोटी-बड़ी क्रिया का प्रारम्भ संत की स्मृति व भजन करके ही करने की निरंतर प्रेक्टिस करें...

3. सेवा करते-करते इधर-उधर की गप्पें या अभाव-अवगुण की बातें कभी ना करें....

4. सेवा करते समय कभी किसी के पास ज़रा भी आग्रह या अपेक्षा ना रखें कि फलां ऐसा क्यों करता है या ऐसा क्यों नहीं करता या ऐसा ही करना चाहिए वगैरह।

स्वरूप को राजी करके हमें तो हमारा पुण्य बढ़ाते जाना है... सो, खूब सावधान रहना है। तभी हम गुणातीत स्वरूपों के अंतर की प्रसन्नता के अधिकारी बन पायेंगे.... ऐसी सेवा के फलस्वरूप ही हमारे अनंत जन्मों से भीतर में डेरा जमाए दोष टल पाएंगे। अपने अंतर की स्लेट साफ रखेंगे तो सत्पुरुष उस पर अपनी बात लिख सकेंगे–हमारा अंतर प्रभुभक्ति से समृद्ध बना देंगे।

हे स्वामिजी ! हम आपके कहलाते हैं, पर अब आपके ही हों, आपके ही रहें–आप में ही खो जाएं.... भजन-प्रार्थना, स्वाध्याय का ही सर्वोपरि उपाय लें–सही अर्थ में आत्मीय बनें.... हमारा अस्तित्व, व्यक्तित्व, अस्मिता, सर्वस्व भूल कर सच्चे आत्मीय सेवक बन कर आपको ठंडक कर दें–यही आपकी जयंती पर प्रार्थना !

✡✡✡✡✡

ताड़देव की गतिविधियाँ

बच्चों की परीक्षाएं होने के कारण **प.पू. गुरुजी की जयंती** 31 मार्च, शनिवार की शाम को **'ताड़देव'** के प्रांगण में अत्यधिक उमंग-उत्साह से परन्तु अत्यंत ही सादगीपूर्ण माहौल में मनाई गई.....गुजरात में आए भूकंप के कारण प.पू. गुरुजी ने लाईटिंग आदि करने व भव्यता से मनाने की नामर्जी व्यक्त करी थी।

30 मार्च की सुबह इन्द्रदेव बहुत जोर-शोर से यानि–बर्फ के ओलों का साज सामान लेकर शायद भक्तों की परीक्षा लेने पधारे... स्टेज तो पूरा तैयार हो चुका था। थोड़ी देर के लिए सभी ढीले पड़ गए; परन्तु तुरंत प.पू. गुरुजी द्वारा सिखाई रीत का आधार लेकर, प्रभु का भरोसा रख कर तीव्रता से धून्य-भजन चालू कर दिया.....प.पू. गुरुजी ने बताया कि 11 बजे तक धूप निकल आएगी और सारा सामान भी सूख जायेगा। सच में प.पू. गुरुजी की वाणी सत्य हुई ! ठीक 11 बजे सूर्यदेवता पधारे... आश्चर्य की बात यह हुई कि डेकोरेशन का सारा सामान अच्छी तरह गीला जरूर हो गया था, पर थर्मोकोल वगैरह पर करा पेईंटींग आदि का रंग वैसा ही रहा; धब्बे आदि भी नहीं पड़े थे। जैसे अग्नि से तपते लाल खम्बे पर चींटीयां चलती दिखा कर प्रभु ने भक्त प्रहलाद् की रक्षा करने का सबूत दिया था, ठीक वैसे ही थर्मोकोल आदि का रंग उतरा हुआ ना देख कर प्रभु द्वारा की गई रक्षा का स्पष्ट संकेत भक्तों को मिला। इससे भी अधिक, निष्ठा-विश्वास दृढ़ हुआ कि कैसी भी परिस्थिति होगी, पर मेरे प्रभु कभी मेरा कुछ बिगड़ने नहीं देंगे..... हमें केवल थोड़ी धीरज रखनी होती है।

31 मार्च की शाम 6.30 तक में पंजाब, अमदावाद, सुरत, राजकोट, मुंबई, वापी से आए व स्थानीय सभी हरिभक्त अपनी गुरुभक्ति अदा करने इकट्ठे हो चुके थे..... प.पू. गुरुजी पंडाल में पधारे.... छोटे-छोटे भुल्कों ने राजस्थानी ड्रेस पहन कर 'घणी खम्मा महाराज साहेब', 'बापजी पधारो.....' आदि शब्दों द्वारा प्रार्थना रूप उद्घोष करके प.पू. गुरुजी का स्वागत किया। स्टेज पर मध्य में विराजमान श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति के नीचे रखे आसन पर प.पू. गुरुजी विराजे.... आसपास की अन्य आर्च पर गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज, गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज, गुरुहरि प.पू. पप्पाजी, गुरुहरि प.पू.. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारी स्वामिजी, प.पू. साहेब की मूर्तियाँ शोभायमान थीं।

इस मंगल अवसर पर **आत्मीय सत्संगीबंधु व केन्द्र के टैक्सटाईल्स मिनिस्टर श्री काशीराम राणा साहेब** खूब अपनेपन से पधारे थे..... 'स्वामिनारायण' धून्य के मंगल आवाहन के बाद प.भ. राकेशभाई ने दूर-सुदूर से आए सभी भक्तों का भावपूर्ण स्वागत किया... भजन के पश्चात् प.भ. योगेशभाई जानी, प.भ. कानजीभाई (राजकोट), श्री महेन्द्र नागपालजी ने प.पू. गुरुजी के प्रति अपने हृदय के उद्गार व्यक्त किए.... श्री काशीराम राणाजी ने विशेष रूप से सरलता के व्यवहार, सादगी, विनम्रता, साधुता, प्रभुता आदि के गुणों का विस्तारपूर्वक दर्शन कराते हुए प.पू. गुरुजी की महिमा बताते हुए कहा–

... जैसे कि हम सब बार-बार सुनते हैं कि –

'गुरु गोविंद दोनों खड़े, किसको लागूँ पांय
बलिहारी गुरु आपकी जिन गोविन्द दियो दिखाए'

ऐसे प.पू. गुरुजी भी मार्गदर्शन करके यही आस्था से हमें भगवान दिखाने की ओर ले जाते हैं। हिन्दु धर्म व हिन्दु समाज में गुरु का स्थान खूब ऊँचा है। यह बात कई सालों से सुनते आए... आज हमारा सौभाग्य है कि हमारे ही गुरु का प्रागट्यदिन हम एक साथ मिलकर मनाते हैं। हमारे ही प्रिय, हमारे ही पिता स्वरूप, हमारे ही सर्वस्व जिनको माना है ऐसे गुरुजी का प्रागट्यदिन हम क्यों ना मनाएं ?

...भगवान की कोई अलौकिक शक्ति से हमें प.पू. श्री गुरुजी का सम्पर्क हुआ और इस सम्पर्क से हमने पाया कि जो प्यार हमें माता-पिता से नहीं मिला, जो प्यार हमने जहाँ शिक्षा ली वहां–वो स्कूल में, वो हाई स्कूल में, वो कॉलेज में नहीं मिला; हमारे वहां गुरु–जिसको टीचर कहते हैं, उनसे नहीं मिला; उससे

अधिक प्यार, उससे अधिक प्रेम हमें प.पू. गुरुजी से मिला है। जिनको हम पिता मानें, जिनको हम माँ मानें, जिनको हम भगवान मानें, जिनको हम शिक्षा देने वाले गुरु मानें—सब हमारे प.पू. गुरुजी में, उनके व्यवहार में, उनके जीवन में हमें मिलता है...

जीवन में कोई पैसा दे दे। पैसा तो आएगा; अगर इज़ी मनी होगा तो जल्दी चला भी जाएगा। लेकिन दिल से जो प्रेम दिया गया, सही मार्गदर्शन दिया गया हो वो तो हमारे जीवन में, हमारे बाल-बच्चों में और जीवन के अंतिम श्वास तक हमें अवश्य ऐसा लगेगा कि हमने उसमें से बहुत कुछ पाकर जिन्दगी में जो कुछ पाना था वो हमने पा लिया।

श्री गुरुजी से मिलते हैं तो ऐसा नहीं लगता कि इतनी बड़ी शक्ति, इतनी बड़ी ताकत हमारे सामने है। ऐसे भोले-भाले, ऐसे बिल्कुल नम्र **श्री गुरुजी का व्यवहार जब हम देखते हैं तो हमें लगता है कि बिल्कुल सादाई उनके जीवन में है। कई संत-महंत को देखते हैं तो उनका प्रभाव बढ़ाने के लिए क्या-क्या तरकीबें की जाती हैं ? चारों ओर ऐसे लोग होते हैं, उनके बारे में कैसे बड़े-बड़े शब्द बनाए जाते हैं !** लेकिन ऐसे करने वाले के प्रति किसी के दिल में इतनी श्रद्धा नहीं होती। वो जानते हैं कि असली कौन हैं नकली कौन है। लेकिन जब हम श्री गुरुजी से मिलते हैं तो हमें लगता है कि मानो सब कुछ पा लिया ! ...

बहुत ही कम ऐसी दिव्य प्रतिभावान, ऐसी मूर्तियां, ऐसी व्यक्ति हमारे सम्मुख अवश्य होती है कि जिसको देख कर हमें लगता है बस, कि ये हमें साक्षात् भगवान मिल गये ! गुरुजी का दर्शन, हमारे लिए उनका मार्गदर्शन और हमारे साथ जो उनका व्यवहार है, उससे हमें लगता है कि हमने जीवन में सब कुछ पा लिया। कितना अच्छा व्यवहार ? जब से गुरुजी को देखा है मुझे तो तब से यही दिल में हो गया है कि जैसे माँ अपने बच्चे से व्यवहार करती है वैसे ही पू. गुरुजी हमारे सम्मुख ये मार्गदर्शन रूप में करते हैं... उनके व्यवहार से, उनके मार्गदर्शन से आप सब परिचित हैं, इसलिए बहुत ज्यादा कहना नहीं चाहता।

... मुझे पूरा विश्वास है कि नाम लेने से भी आपके कई दुःख दूर करने की आपको शक्ति मिल जाएगी... मैं कहूंगा कि इसी प्रकार आप जब भी अपने जीवन में कठिनाईयाँ महसूस करो, प.पू. गुरुजी को याद करो; मुझे पूरा विश्वास है कि आपकी सभी कठिनाईयाँ वैसे ही दूर हो जाएंगी।

सब लोग गुरु का स्थान नहीं ले सकते। गुरु चाहते हैं कि सभी गुरु बनें। गुरु सभी नहीं हो सकते। अगर सभी गुरु हो गए, हो जाएं तो बहुत अच्छा है। देश का कल्याण हो जाए, पूरे जगत का कल्याण हो जाए...

हम तो सब माया में फंसे हुए लोग हैं। कहीं ना कहीं लोभ-लालच है। हमें भी तो पद की वैसी लालच ही है। हम गुरुजी का स्मरण अवश्य इसलिए करते हैं कि गुरुजी हमें इसमें से बचाना, हम कोई गलत काम ना कर बैठें। हम भी इस तरह से जीवन जीएं, जिससे कि हमारे प्रति सभी को सम्मान हो... एक आदमी को आदमी बनाना... सब महसूस करें कि मैं गुरुजी का एक अंश हूँ। गुरुजी का अंश हमारे में आया, तो—हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिए...

गुरुजी कुछ नहीं मांगते; जो देने के लिए आए हैं— वो आपसे क्या लेंगे भला ? जिन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया—समाज के लिए, राष्ट्र के लिए वो आपके पास कैसे कोई ऐसी चीजें मांगेगे जिससे फिर मोह माया में फंस जाएं ? **वैसे तो गुरुजी कभी मांगते नहीं, मांगेगे भी नहीं...**

आज उनकी 64वीं जन्म जयंती है। हम उनको तो कुछ नहीं दे सकेंगे । लेकिन उनकी मन की इच्छा जो है, वो समझ कर हम कम से कम उनके बताए हुए रास्ते पर चल कर एक अच्छा मनुष्य जीवन जीएं ! धर्म के रास्ते पर चलें क्योंकि धर्म ही हमें आकर बचाएगा। **धर्मो रक्षति रक्षितः।**

...हमारे पास जो भी सम्पत्ति है—शारीरिक, भौतिक या आर्थिक अगर हो सके तो धर्म के कार्य के लिए लगाएं और इससे ही अपना जीवन का जो कल्याण करना है वो कल्याण के मार्ग पर आगे चलें। आज हमें कहां से कहां ला कर रख दिया है गुरुजी ने ! **मुझे तो बार-बार श्री गुरुजी का इतना अच्छा ऐसा प्रेमाल व्यवहार का अनुभव हुआ है कि मैं अपने जीवन में कभी भूल नहीं सकूंगा।** भगवान सहजानंदस्वामी महाराज के जो सत्य कहे गए, वो उनके मुख से सुनकर हमें अपने आचरण में लाना पड़ेगा। इसीलिए मैंने कहा कि सब गुरुजी नहीं बन सकते।

...जैसे-जैसे उनके करीब जाएंगे, जैसे-जैसे उनके बताए हुए रास्ते पर जाएंगे, मुझे विश्वास है कि इससे आपके जीवन में इतना आनंद आएगा। ऐसे परम सुख की आपको प्राप्ति होगी जो ना पैसे से मिलेगी, ना कोई पद से मिलेगी; लेकिन वो श्री गुरुजी के प्यार से ही मिलेगी। ऐसे श्री गुरुजी हमारे साथ आज विराजमान हैं। कैसा बड़ा सौभाग्य लेकर हम सब लोग इधर आएं हैं ! कितना बड़ा सौभाग्य ! ये सौभाग्य को हमें और भी बढ़ाना है। अवतारों ने अपना कार्य पूरा किया—जैसे कि रामचन्द्रजी ने रावण का नाश करके, श्री कृष्ण ने कंस का नाश करके किया; यहां तो कदम-कदम पर रावण और कंस की श्रृंखला है।

आज आदमी की नियत कब बदल जाए उसका कोई भरोसा **नहीं... जैसे कोई बड़े धनवान ने बहुत बड़ा दान दिया हो और वो मान लेता है कि—चलो मैंने यज्ञ कर लिया, मैंने एक मंदिर बना दिया, मैंने बहुत बड़ा धर्म का काम कर दिया। ठीक है, अपनी आत्मा के मानसिक संतोष के लिए ठीक है। अगर वो काम करने**

के बाद अगर धर्म के रास्ते पर चले तो अच्छा है। परन्तु वो वही का वही काम चलता रहा—लोगों की जेब में से पैसा लूटता रहा, औरों को मारता रहा, ऐसी अवस्था अगर आज भी है, तो श्री गुरुजी का मार्गदर्शन इसीलिए बहुत बड़ा अमूल्यवान है।

आज चाहे हम बहुत थोड़े हरिभक्त हों, लेकिन फिर भी हमारे श्री गुरुजी की कृपा और आशीर्वाद से कम से कम अधर्म के रास्ते पर तो हम नहीं चलते। ऐसी शक्ति, ऐसी ताकत श्री गुरुजी ने अपने मार्गदर्शन और प्यार से दिया है।

हम वो ही रास्ते पर चलें जो श्री गुरुजी हमें बताएं। गुरुजी वो ही रास्ता बताएंगे जो श्री भगवान सहजानन्दस्वामी महाराज ने दिया...उसमें से हमारी नज़र किस तरह से उनको देखती है, ये हमें सोचना है।

कहते हैं कि भगवान स्वयं नहीं आते इस कलियुग में। भगवान अपने दूत से काम करवाएंगे, समाज को संदेशा पहुंचाएंगे। आज वो ही काम—भगवान के दिए हुए सन्देश हमारे तक पहुंचा कर हमें भी वो दिव्य वातावरण में ले जाने की कोशिश श्री गुरुजी करते हैं। **हम बड़े सौभाग्यशाली हैं कि हमें गुरुजी का स्पर्श हुआ है।**

आज प्रागट्य दिन पर श्री गुरुजी को हम यही प्रार्थना करें कि आपका प्यार, आपके आशीर्वाद की नज़र हमेशा-हमेशा हमारे पर, परिवार पर, ये समाज और राष्ट्र पर रहे। हम आपके लिए जीएंगे, आप ने जो मकसद, जो मिशन लिया है वो मिशन को सफल बनाने के लिए हम जीएंगे। जो भी है वो आपका है... जीवन समर्पित कर दिया तो जीवन समर्पण में सब कुछ आ गया। **जहां समर्पण है वहां सफलता है।** आदमी अगर त्याग करेगा तो अवश्य परिणाम आएगा। गुरुजी! 'आप जैसा बनाएंगे हम बनेंगे'— यही संकल्प लेकर हम चलेंगे तो गुरुजी का ये प्रागट्य दिन हम जो आज मना रहे हैं, इसकी खुशी में और बढ़ोत्तरी हो जाएगी। इससे ज्यादा कहने की कोई आवश्यकता नहीं... जय स्वामिनारायण !

श्री काशीराम राणा साहेब के प्रवचन के पश्चात् हार विधि-केक कटिंग का कार्यक्रम शुरु हुआ.... आज के लिए दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से **विशिष्ट हार** बनाया था। जैसे कि स्वामिनारायण महामंत्र का मंगलकारी वर्ष चल रहा है—उसे मद्देनज़र रख कर प.पू. गुरुजी की 64वीं जयंती निमित्त **दो लाख चौसठ हजार मंत्र लिख कर** प.पू. गुरुजी को **हार के रूप में भावांजली दी थी।** साथ ही प्रार्थना करी थी कि हर प्रसंग पर सुहृदभाव से मिलजुल कर एकमात्र भजन का ही उपाय लेते हम हो जाएं..... ऐसे ही केक को भी पूरा 'स्वामिनाराण-स्वामिनारायण' महामंत्र से इसी भावना के साथ भरा था कि प.पू. काकाजी यानि—धून के राजा, उसी तरह प.पू. गुरुजी ने हर प्रसंग पर धून का सहारा ले-लेकर हमें जो सिखाया है कि कैसे भी संजोगों में मन-बुद्धि के मूल्यांकन, उपाय छोड़कर मात्र भजन का ही उपाय लें—उसका हमें व्यसन लग जाए और स्वामिनारायण महामंत्र का रटन हमारे भीतर और जुबान पर हर सैकण्ड अविरत बहता ही रहे—बहता ही रहे.....

हार व केक के अतिरिक्त एक अन्य स्मृति रूप भावना प्रकट करी थी। 26 जनवरी 1986 को जब विद्यानगर में प.पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन मनाया गया, तब अपने प्रवचन में प.पू. काकाजी ने अत्यधिक आध्यात्मिक रहस्य की बातें की, लेकिन साथ-साथ बीच में कुछ हंसी मजाक की बातें करके-ऐसे जेस्चर करके हम सभी को भूल-भुलैया में भी डाल दिया... इसी प्रवचन में प.पू. काकाजी ने गेहूं की 64 आईटम्स वाली बात करी थी। प.पू. काकाजी के उन्हीं शब्दों की स्मृति रूप गेहूं से बनी चौसठ आईटम्स प.पू. गुरुजी को छोटे-छोटे बच्चों ने इस भावना से अर्पण करी कि—जैसे प.पू. काकाजी की मजाक में कही यह बात हमने पकड़ी, वैसे ही उनके द्वारा दिए सुखी होने के ब्रह्मसूत्र-सिद्धांत भी खूब जाग्रतता से पकड़ पाएं। दूसरी बात—शास्त्रों में साधु के 64 गुण बताए हैं.... तो हे गुरुजी ! आप प्रभु को अखंड धारे हुए व चौसठ गुणों के अखंडधारक हो... हम सबको कितने अनुभव भी आपने कराए हैं। तो, आज के दिन आप हमारे लिए जरूर संकल्प करना कि आपको सर्वज्ञ, निर्दोष, कल्याणकारी मानकर अंतरायरहित संबंध रख कर आपके गुणों को पाएं और आपका परिचय बनें !

हार अर्पण विधि एवं केक कटिंग के पश्चात् सुरत से आए प.भ. अमृत वडिया साहेब, मुंबई से आए प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी, प.भ. पुनीतजी (पानीपत), प.भ. अजय मल्कानी जी आदि ने अपनी भावनाएं व्यक्त करके सभा को भावविभोर कर दिया....

रात के दस बजने आए थे, समय के व्यतीत होने का तो पता ही नहीं चल रहा था। प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन की सभी बेसब्री से राह देख रहे थे... प.भ. अजय मल्कानी जी द्वारा की गई **' बर्थ डे रिटर्न गिफ्ट '** की प्रार्थना से प.पू. गुरुजी ने अबकी बार सत्संग के निचोड़ रूप व गहराई की पाँच बातें बहुत ही साधारण रूप में बताईं..... दूर-सुदूर सभी भक्तों को प.पू. गुरुजी की इन बातों का लाभ मिल सके इस भावना से प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन का निचोड़ यहां दे रहे हैं...

''अजय ने बहुत अच्छी बात करी कि रीर्टन गिफ्ट लेकर जाना है। अब इन्होंने कहा है तो रिटर्न गिफ्ट देनी भी पड़े....एक बार अन्नकूट पर यहाँ ऊपर सूत्र रखा था कि—'बस, आप आए हो इतना काफी है।' यही बात आज मैं फिर दोहराता हूँ कि आप सब जो आज यहाँ आए हो; खूब विश्वास से मानना **इस मंदिर के चौकड़े में आने को जो हमें मिला है, वह हम सब का खूब बड़ा**

भाग्य है। ये बात अगर आपके दिमाग में बैठ जाए तो बहुत बड़ा करिश्मा हो जाए..... इस कोम्पलेक्स के अंदर आना ही बड़ा मुश्किल है और आए तो टिकना और भी मुश्किल है। **जिसे सिर्फ प्रभु चाहिए होंगे–सिर्फ प्रभु ! मतलब प्रायोरिटी प्रभु की होगी वो ही यहां टिक पाएगा।** मेरे कहने का मतलब आप ये नहीं समझना कि आपका और कोई काम नहीं होगा। भगवान स्वामिनारायण ने वरदान दिए हैं कि भुक्ति, मुक्ति और स्थिति। देखो, इसमें भुक्ति भी आई। इस लोक की सारी चीजें भी, लेकिन प्रभु को छोड़कर वो नहीं। ये राणा साहेब ने बहुत अच्छा डिस्क्राईब करा। दान भी कोई देवे-करे, मान के लिए होगा तो हम नहीं टिक पाएंगे। कीर्ति के लिए होगा, हम टिक नहीं पाएंगे। बरोबरी की भावना से सेवा करी होगी–जैसे कि इसने हजार रुपए की रसोई दी तो मैं पाँच हजार का दूं–वो नहीं चलेगा। लेकिन, मेरे प्रभु राजी होंगे–बस यही एक भावना होगी, तो प्रभु तुम्हारे लिए सब कुछ न्यौछावर कर देंगे।

जो यहां थे उन्होंने 1985 की यह बात तो सुनी होगी। काकाजी यहाँ आए हुए थे। उन्होंने कहा था कि अगर मैं चाहूँ तो यहां से मेरठ तक की लाईन लगा दूं। एक करिश्मा ऐसा कर दूं, तो यहां से मेरठ तक दर्शन के लिये लाईन लग जाए। आपने यहाँ ये झंडे वाला मंदिर देखा होगा। नवरात्रे के दिनों में कितनी लम्बी लाईन होती है? इससे भी बढ़कर काकाजी ने ये कहा कि मैं चाहूँ तो मेरठ तक ! इमेजिन तो करो। फिर बोले, लेकिन फिर मैं तुम्हारे हाथ नहीं आऊँगा। इसीलिए ये करना नहीं है। देखो, **ये अपनी प्रणाली है। ये अपनी रीति और नीति है।** काकाजी ने कोई नई बात नहीं करी यह।

वचनामृत मध्य का 63 में महाराज ने लिखा है कि 69 में जब दुकाल पड़ा था, उस समय हम बीमार हो गए। फिर अलग-अलग लोक में गए और नंदिश्वर की सवारी करी। लेकिन हमें कुछ रास नहीं आया। उस जमाने के ढंग से बात करते हैं ये। पर वह पत्ता ही काट दिया महाराज ने।

मतलब–बड़े-बड़े जलूस निकालने, सवारियां निकालनी-शोभायात्राएं निकालनी, स्वागत समारोह करने जो कहते है सम्मान समारोह करने। बड़े-बड़े एग्ज़ीबीशन्स लगाने वगैरह –महाराज ने कहा–मुझे वो पसंद नहीं। आगे कहते है-हमने फिर सोचा कि आत्मा में रहें, आत्मसत्ता रूप रहें। पर, फिर बोले कि-ऐसे करते रहेंगे और ये शरीर न रहे-भक्तों का संग ना रहे तो ? यूं वो भी इन्हें रास नहीं आया। कोई साधु-महात्मा आत्मा में स्थित रहता हो, सिर्फ आत्मसत्ता रूप जीता हो उसका हम पर कितना प्रभाव पड़ जाएगा कि ये कितने दिनों तक खाना भी नहीं खाता, ये तो जमीन में डटा रहता है–एटसेक्ट्रा-एटसेक्ट्रा। महाराज ने उस पर भी चौकड़ी मार दी। फिर बोले कि **हमें तो एक ही बात अच्छी लगती है कि ऐसे भक्तों के बीच किसी प्रकार के निमित्त से जन्म लेकर जीना है।** देखो, एक बैलेन्स रखा है यहां। जैसे राणा साहेब ने कहा न कि कई विभूतियां झाक-झमक-दमक से जनता को प्रभावित करके अपने पीछे खींचने की कोशिश करती हैं। दूसरी ओर एकदम ऐसा अनासक्त ! कोई ममता नहीं, सिर्फ आत्मा में रहना। दो एक्सट्रीम चीज़ें हैं। महाराज ने बिचौला रास्ता निकाला ! **ऐसे मुक्तों के बीच, ऐसे भक्तों के बीच–उनके लिए जीना है। इनके आनंद से हमारा आनंद है।**

तो, ये सारा एक आनंदोब्रह्म का कोम्पलेक्स है। यहां प्रभु केन्द्र में रखने हैं। प्रभु को रख करके सब कुछ करें। ऐसे भक्तों को साथ में रख कर सब कुछ करें। रिटर्न गिफ्ट चाहिए न ? ये दो चीज रखेंगे–भगवान और संत, भगवान और भक्त ! हमारी हर प्रकार से हमेशा रक्षा होगी। इतना ही नहीं-इसी में हमारा विजय है, श्री है, यश है, कीर्ति है-गीता का आखिरी श्लोक !

लेकिन जैसे सभी वक्ताओं ने बोला और हम सब भी उसी में से गुजरे हुए हैं कि ऐसी भव्य प्राप्ति होने के बावजूद भी कुछ न कुछ परेशानी महसूस करते हैं। कई बार कुछ ऐसा बनता है तब लगता है कि अरे ! हम गल्ती खा गए। हम गल्ती खा जाते हैं, वह हमारे माईन्ड के कारण है। सो, काकाजी कहते थे–'नो माईन्ड लेन्डींग।' वो ना हो उसके पाँच उपाय हैं–

✷ **पहला उपायः** प्योरली शिक्षापत्री के मुताबिक जीवन का व्यवहार हो, तब तो हम कोई गल्ती नहीं कर पाएंगे और कोई दुःख नहीं आएगा।

शिक्षापत्री में छोटी से छोटी चीज़ भी लिखी हुई है। सगे बाप के साथ भी पैसे का कारोबार करो, लिखा-पढ़ी करके करो। आज संतों के पास भी हम जो अपनी मुश्किलें वगैरह लेकर जाते हैं, ऐसे ही तो प्रॉब्लम होते हैं कि भई ! इनको पैसे दिए थे, वो देता नहीं है–डूब गए मेरे पैसे। लिखा-पढ़ी नहीं करी थी ना ? यूं ऐसी प्रॉब्लम्स खड़ी होती हैं। कोई महोब्बत कह दो रिश्तेदारी की, कोई लोकलाज–कुछ ना कुछ मेन्टल फंक्शन आ गया होगा, जिसने हमें शिक्षापत्री का पालन नहीं करने दिया।

तो प्योर शिक्षापत्री के मुताबिक चलते रहें। वहां किसी को पूछने की जरूरत नहीं। महाराज ने हर चीज़ लिखी हुई है। पर, शिक्षापत्री के बंधन में मानो कोई नहीं रह सकते हैं; तो–

✷ **दूसरा उपायः** जो भी करना हो ऐसे बड़े संत को चार कानों में पूछ करके ही करना।

उसमें भी दिल की सच्चाई से धून करके जाना कि स्वामी ! मैं आपके पास आ रहा हूँ ; मेरे मन में तो ये है कि मुझे ये करना ही है, लेकिन जैसे काकाजी कहते थे–'इररिस्पेक्टीव ऑफ माई थींकिंग, लाइकिंग, बीलीफ और कन्वीक्शन, लेट

धाई विल बी डन' ! आप मुझे बताना कि क्या करना, करना कि नहीं करना।

✷ **तीसरा उपायः** ऐसे निष्ठा वाले पाँच भक्त-जो ऐसे संत से जुड़े हुए हों, इन्हें साथ में रख कर-शामिल करके उनसे मेल करके तुम्हारे कार्य की शुरूआत करना। हमारे हक में वह नहीं होगा, तो उनके द्वारा प्रभु हमें करने ही नहीं देंगे। **यूं चार-पांच निष्ठा वालों के साथ मिल कर उनके अभिप्राय से काम करना।**

पर, हमें हमारा मनमाना करना होता है। सो हम किसी से सलाह–मश्वरा करते नहीं, जो हमारे मन की चोरी होती है।

✷ **चौथा उपायः** ये बड़ा कठिन है। हर एक के बस का भी नहीं–एकांतिक का है। हमेशा मूर्ति में रह कर ही हर एक काम करते रहें–'धेन वी विल कमिट नो मिस्टेक !' स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण..... कन्टीन्यूअस ! मूर्ति में रह करके, प्रत्यक्ष मूर्ति–जिसको हमने देखी हुई है–उसको भीतर में साथ में रख करके। फिर जो भी कदम उठायोगे, वो प्रभु प्रेरित होगा। जो कभी गलत हो ही नहीं सकता। पर, ये कन्टीन्यूअस होना चाहिए।

और–

ये चारों में से कोई उपाय लेना नहीं जमता तो–

आखिर इतना तो करें कि –जब भी कोई काम करना हो, मानो यहां से बाहर भी जाना है–चलो, मन हुआ कि अब हम पिक्चर देखने जाएं या होटल में जाएं, तो उस विचार या भावना के जो वेग में हम होते हैं उसमें से स्थिरभाव में आएं तब तक संत की स्मृति सहित 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' करें; फिर भी वो ही विचार आ जाए–दूसरी बार करने के बाद, तो भजन करके वो कदम उठाओ। वह हमारे फेवर में नहीं होगा, तो प्रभु करने ही नहीं देंगे।

सो आप यहां आए हो, जन्मदिन मनाना-करना या ऐसे फंक्शन्स करने, ये सारे तो निमित्त होते हैं कि इसी वजह से हम सभी इकट्ठे हों–आनन्द करें। आपस की कुछ गोष्ठि करें और हमें मुफ्त में जो मौज मिली है, ये संबंध हुआ है–गुजरात में भी मैंने बात करी थी कि अपने जीवन की सबसे बड़ी आश्चर्यकारक घटना कहो तो वह यही कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसों का जोग हो गया, संबंध हो गया। जीवन की बहुत बड़ी घटना बन गई है यह। अगर ये नहीं होते–ये संबंध नहीं हुआ होता तो क्या होते हम आज ? पू. भरतभाई ने बहुत अच्छी तरह लिखा हुआ है कि उन्होंने हमें कहां से कहां रख दिया ? और उसकी वजह क्या है वह मेथेमेटिक्स तो हम समझ भी नहीं पाते।

तो, ये रिटर्न गिफ्ट कि भई हमें जो ये मंदिर का संबंध हुआ है वो बहुत बड़ी घटना हमारे जीवन में बनी हुई है। वो संबंध को पकड़ कर हम हमेशा चलते रहें और प्रायोरीटी प्रभु की रख करके जीयें ताकि जीवन में ज्वार-भाटे कभी आए नहीं। बस इतनी स्थिरता या ऐसी एक निष्ठा हमारी हमेशा दृढ़ होती जाए यही प्रार्थना !''

(ध्वनिमुद्रित आशीर्वचन से संकलित)

(राग- ये किसके चहेरे का जादु है...)

फैला दो प्रभुता की सौरभ यूं मेरे जीवन में,
तेरे दीदार के सिवा आरजू न रहे।
फैला दो प्रभुता...

तू सुख मूर्ति का देकर जन्नत प्रगटा दे, -2
तेरा संबंध ही अक्षरधाम बख्शिश दे,
अपार महिमा चिंतामणि सम मूर्ति का,
न कोई छोर पा सका, नेति-नेति कहे।
फैला दो प्रभुता...

संबंध आप के साथ ऐसा अब तो हो जाए, -2
कि चेहरे का हमारा नूर ही बदल जाए,
खुदा की नज़रे इनायत की ही तमन्ना हो,
ज़मानेभर की दौलतों की जुस्तजू न रहे।
फैला दो प्रभुता...

मूर्ति काकाजी की ये रोम-रोम बसाए हैं, -2
जीव को शिव करे शिल्पी ऐसे न्यारे हैं,
अंनत रुप में अनंत जीवों को भाए, -2
प्रहार करके मूलवृत्ति को तू छुड़वाए,
जब अपनी कसनी में तुम लो तो हमको देना बल
मायिकभाव न आए, दिव्यता ही बहे।
फैला दो प्रभुता...

साकार ब्रह्म काकाजी ने कृपा से दिए हैं, -2
प्रत्यक्ष धाम, धामी, मुक्त हमने पाए हैं,
गुरुजी रुप में मिले हैं अक्षरपुरुषोत्तम,
न कोई भाव प्रकृति पुरुष तक का रहे।
फैला दो प्रभुता की सौरभ यूं मेरे जीवन में,
तेरे दीदार के सिवा आरजू न रहे।
फैला दो प्रभुता...

।। जपयज्ञ-अनुष्ठान ।।

ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज धून के राजा !
और
40 दिन के अनुष्ठान पर वे खूब ज़ोर देते थे।
तो—
आइये, इस बार
दिनांक 1 मई 2001, मंगलवार से 12 जून, 2001, मंगलवार तक
रोज़ सुबह 6.30 से 8.15
प.पू. गुरुजी की निश्रा में 'ताड़देव' में
धून का अनुष्ठान करें.....
मुंबई-गुजरात-पंजाब-हरियाणा-यू.पी.-राजस्थान-एम.पी. से
इस अनुष्ठान में चाहे दो-तीन दिन के लिए भी आने की इच्छा रखते हों;
वे कृपया हमें पहले से सूचित कर दें,
ताकि उनके ठहरने-करने की व्यवस्था करने में सुविधा रहे।

—योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 26.4.2001 गुरुवार – अखात्रीज
(2) दि. 4.5.2001 शुक्रवार – एकादशी, व्रत
प्र.ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्मजयंती
(3) दि. 6.5.2001 रविवार – नृसिंह जयंती
(4) दि. 19.5.2001 शनिवार – एकादशी, व्रत
(4) दि. 20.5.2001 रविवार – गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज का प्रागट्य दिन

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393